Hill Quest: A Multidisciplinary, National Refereed/Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 11, Issue 01, January-June 2024
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2024

पंडित अजय पोहनकर: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

DR. SANGEETA

Associate Professor, Dev Samaj College for Women, Ferozepur City

संक्षेपिका

शास्त्रीय संगीत को रागदारी संगीत भी कहा जाता है जिसमें ख्याल गायन होता है। शास्त्र में बंधा होने के कारण शास्त्रीय संगीत अन्य प्रकारों की अपेक्षा सूक्ष्म व समझने में भी कठिन है। इसीलिये शास्त्रीय संगीत को सुनने के लिए एक विशिष्ट समुदाय ही उपस्थित होता है जो इसका जानकार होता है तथा जिसे शास्त्रीय संगीत समझ में आता है। शास्त्रीय संगीत में भी प्रत्येक काल में जनरूचि के अनुसार कुछ बदलाव आते रहे हैं। आज के युवा कलाकार किसी एक घराने से संबंधित तो होते हैं किंतु अपने मूल घराने की गायकी में अन्य घरानों की कुछ अच्छी चीज़ें या गुण भी अंगीकार कर लेते हैं, जिससे उनकी गायकी में अधिक निखार आ जाता है। उनके अपने मूल घराने की विशेषताओं को कायम रखते हुए अन्य घरानों की कुछ विशेषताएँ, विचार या कल्पनाएँ जोड़ कर गायकी का एक नवीन रूप उपस्थित होता है। इस दृष्टि से आज के युग में संगीत में नवाचार एवं प्रयोग करने वाले महान विद्वान पंडित अजय पोहनकर जी की गायन शैली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन इस शोध-पत्र का उद्देष्य है।

मुख्य शब्द: शास्त्रीय, गायन, शैली, घराना, नवाचार, रचनाएँ

भूमिका

विश्व में कुछ गिनी-चुनी विभूतियाँ ऐसी होती हैं जो अपने जन्म के साथ ही कोई लक्ष्य व साधना लेकर आती हैं तथा आजीवन उसी की पूर्ति में संलग्न रहती हैं। अजय पोहनकर एक ऐसे ही विरल महानुभावों में से एक हैं जो संगीत के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। पंडित अजय पोहनकर संगीत के सच्चे साधक हैं, जिन्होंने संगीत के प्रति अपनी निष्ठा को सदैव बनाए रखा है। आप एक ऐसे संगीत विद्वान हैं जो स्वयं को एक ऐसा संगीत विद्यार्थी मानते हैं जो संगीत के क्षेत्र में सदैव नवीन रचनाएँ एवं प्रयास करते हैं। आप संगीत की प्रत्येक विधा का आनन्द लेते हैं, चाहे वह ठुमरी हो या संकीर्तन अथवा ग़ज़ल। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में कई बड़े-बड़े दिग्गज कलाकार भी नवाचार करने की दृष्टि से फ्यूज़न का आधार लेते हैं, जैसे-उ. राशिद खाँ, कौशिकी चक्रवर्ती, उ. जाकिर हुसैन, तौफिक कुरैशी साहब आदि। पं. अजय पोहनकर जी भी ऐसे ही नवाचार के प्रवत्तक हैं। पं. अजय पोहनकर की गायकी में विविधता है क्योंकि वह एक शास्त्रीय ख्याल गायक होने के साथ ही साथ, अर्धशास्त्रीय संगीत जैसे- ठुमरी, दादरा आदि गान विधाओं के भी ज्ञाता हैं। आपने इन विविध गान-शैलियों के मंजुल सुमेल द्वारा नवीन प्रयोग कर, विश्वस्तरीय रचनाओं का निर्माण किया है।

पं. अजय पोहनकर: जीवन एवं गायन शैली

24 फरवरी सन् 1947 में मध्य प्रदेश के एक छोटे से शहर जबलपुर के एक सभ्रान्त परिवार में एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम अजय रखा गया। आपके पिता एक वकील थे और आपकी माता शास्त्रीय संगीत की गायिका थीं। आपकी बहन स्वाति नाटेकर भी शास्त्रीय संगीत की गायिका हैं जो इंग्लैंड में रहकर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार एवं प्रसार में अपना योगदान दे रही हैं। अजय पोहनकर बाल्यावस्था में जब केवल 10 वर्ष के थे और उनके संगी-साथी खेलकूद रहे होते थे, तो इस समय वे रागों का गहन अध्ययन करने में व्यस्त रहते थे। इसका श्रेय उनकी माता जी श्रीमती सुशीला बाई पोहनकर को जाता है जो स्वयं किराना घराने की ख्याति प्राप्त ख्याल गायिका थीं। आपकी माता जी श्रीमति सुशीला पोहनकर स्वयं एक संगीत विदुषी थीं इसीलिए आपकी शिक्षा उनकी देखरेख में ही हुई। उन्होंने अपने सुपुत्र अजय पोहनकर जी को ग्वालियर, पटियाला और किराना घराने के गायन की शिक्षा दी। संगीत के क्षेत्र में उनकी उच्च-शिक्षा के कारण ही आपको उ0 अमीर खाँ, नज़ाकत-सलामत अली खां,

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Refereed/Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 11, Issue 01, January-June 2024
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2024

हीराबाई बड़ौदकर, पं0 ओंकारनाथ ठाकुर, बेग़म अख़्तर एवं पं0 भीमसेन जोशी जैसे दिग्गज कलाकारों के सम्मुख प्रस्तुति देने का अवसर मिला। उ0 अमीर खाँ पण्डित जी का गायन सुनकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन के लिए पण्डित जी के नाम की अनुशंसा कर दी।

सन् 1958 में, 10 साल की छोटी सी उम्र में ही उस्ताद अमीर खाँ साहब द्वारा एक बाल कलाकार के रूप में आपका संगीत-दुनियाँ में परिचय करवा दिया गया था। आपने छोटी से आयु में ही प्रतिष्ठित संगीतायोजनों जैसे सवाई गान्धर्व संगीत उत्सव, पुणे तथा कलकत्ता कॉफ्रेंस में भाग लेकर स्वयं को एक उत्कृष्ट बाल कलाकार के रूप में स्थापित किया। 10 वर्ष की बाल्यवस्था में ही उस्ताद अमीर खाँ साहब ने उनकी गायकी से प्रभावित होकर उन्हें कोलकाता में लाला बाबू जी को, जो संगीत सम्मेलन के अध्यक्ष थे, से मिलवाया और यहां से उनका गायन प्रदर्शन का सिलसिला चल पड़ा। यहीं से पंडित जी को उस्ताद अमीर खान साहब जी के साथ उठने-बैठने का भी सौभाग्य मिला। आपको उस्ताद बिस्मिल्लाह खां, पंडित शिव कुमार शर्मा एवं पंडित भीमसेन जी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त था।

तब से आज तक लगभग 50 वर्ष की सांगीतिक यात्रा में आप असंख्य प्रस्तुतियां देश मे और विदेशों में दे चुके हैं। पं0 जी ने संगीत के साथ-साथ अंग्रेजी में भी स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। पंडित जी कुछ समय पहले तक मुंबई यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर के पद पर आसीन थे। लेकिन कार्यक्रमों की व्यस्तता के कारण उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। संगीत-सभाओं में प्रदर्शन करने के कारण तथा व्यस्तताओं में वृद्धि होने के बावजूद भी पं0 अजय पोहनकर जी निरन्तर अभ्यास में पूरी निष्ठा एवं लगन से जुड़े हैं।

अजय पोहनकर जी की धर्मपत्नी अंजलि स्वयं एक गायिका, संगीतज्ञा एवं लेखिका हैं। आपके पुत्र अभिजीत पोहनकर भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के कीबोर्ड प्लेयर, फ्यूज़न म्यूज़िक के कम्पोज़र और प्रोड्यूसर हैं। आपके पुत्र एक मात्र ऐसे संगीतज्ञ हैं जो कीबोर्ड पर शास्त्रीय संगीत बजाते हैं।

गायन-शैली

किराना घराने से संबंधित पंडित अजय पोहनकर जी संगीत रचना को उसके सही रूप में निभाते हुए, स्वतंत्र एवं सौंदर्यात्मक तरीके से गाने के कारण आज के ख्याल गायकों की पंक्ति में अग्रिम स्थान रखते हैं। आपने गायकी की परंपरा को निभाते हुए अपने अंदाज से सौंदर्यात्मक तत्वों का मिश्रण करते हुए, बड़े गुलाम अली खान साहब और उस्ताद अमीर खाँ साहब के गानों में स्वयं की ओर से कल्पनात्मक सौंदर्य तत्वों को मिलाकर, एक नवीन गायकी का सृजन किया है। स्वर को खुला परंतु मुलायमियत के साथ गाना आपकी विशेषता है। अपने गले में खटका, मुरकी इत्यादि सभी अलंकरणों का प्रयोग दर्शाने की उनमें विशिष्ट क्षमता है। भावात्मक गायकी को परंपरा से जोड़कर गाने की अद्भुत कला का सामंजस्य उनकी कृति में मिलता है। आप सरगम को भिन्न-भिन्न स्वरों से मूर्च्छना पद्धति के अनुसार, प्रारंभिक स्वर को आधार मानकर इतना चमत्कारिक प्रयोग करते हैं जो देखते ही बनता है। उसमें इतनी तैयारी भी दिखाई देती है कि किसी भी गायक के लिए उसी समय वास्तविक सरगम भी कहनी कठिन हो जाए।

शास्त्रीय संगीत में नवाचार

आप संगीत की कई विधाओं में निष्णात हैं इसलिए आपने अपने पुत्र के साथ पिया बावरी, टेम्पल म्यूज़िक, अर्बन राग, बिरहा, राह दर्पण, डीपर जोन, कृष्णा अलंकार, मधुसुदर्शन आदि कई एलबम निकाले, जिन्हें लोगों की प्रशंसा और प्यार मिला। अपनी पिया बावरी एलबम के बारे में बताते हुए पंडित जी हर्ष का अनुभव करते है। उनके अनुसार इसे आम जनमानस ने तो सर आंखों पर लिया ही है, इसे संगीत के गुणीजनों ने भी बहुत सराहा है। पंडित जी की इस समय संगीत के क्षेत्र में 100 के लगभग रिकॉर्ड सीडी व कैसेट आ चुके हैं, जिनसे आम जनमानस में तो ख्याल गायन का प्रचार हुआ ही है, साथ ही गुणी श्रोताजनों को भी अच्छा

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Refereed/Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 11, Issue 01, January-June 2024
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2024

शास्त्रीय गायन सुनने का लाभ हुआ है। ख्याल गायन के अतिरिक्त ठुमरी गायन में भी इनको अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त है। टी.वी. पर विभिन्न चैनलों पर भी इनके द्वारा गाए मराठी सीरियल्स के शीर्षक गीत अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं, जिनसे जनमानस भी हमारी शास्त्रीय गायन की परंपरा से प्रभावित हुआ है और पॉप संगीत जैसे प्रचलित संगीत से हटकर शुद्ध संगीत की तरफ आकर्षित होता नजर आ रहा है।

पंडित अजय पोहनकर जी के अनुसार स्वर, ताल एवं शब्दों के मज्जुल संयोजन से बनी उपशास्त्रीय रचनाओं द्वारा आमजन को भी संगीत से आकर्षित कर, जोड़ा जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत को आमजन तक पहुँचाया जाए। आप शास्त्रीय संगीत को अपने पारम्परिक रूप से बाहर निकालकर उसे बोधगम्य एवं रंजक बनाने के पक्षधर हैं, जिससे श्रोताओं को हर प्रस्तुति में एक नयापन लगे।

पंडित जी के विचार में आजकल आधुनिक ख्याल शैली को अगर आम जनमानस में लोकप्रिय बनाना है तो अवश्य ही इसमें समय के साथ-साथ परिवर्तन को स्वीकारना पड़ेगा। परंपरा को बनाए रखते हुए, गायक अपनी कल्पना शक्ति से नवीन प्रयोगां को अपनाते हुए परंपरागत बंदिशों को कलात्मक एवं भावात्मक ढंग से प्रस्तुत करे - यह वर्तमान युग की आवश्यकता है। उनके विचार से सुरीला गाना हर काल में सराहा गया है और आज कल तो सुनने के लिए अति समृद्ध संसाधन उपलब्ध हैं। श्रोता गण को यदि गाने में अत्यधिक सुरीला और नवीन प्रयोग सुनने को मिले तो अवश्य ही यह उनकी मार्मिक भावनाओं पर गहरा प्रभाव डालता है और इस तरह उनको इस परंपरा से जोड़ने में यह प्रयोग सफल होगा।

संस्थागत संगीत शिक्षण प्रणाली

पंडित अजय पोहनकर जी को विश्वविद्यालयीन शिक्षा पद्धति से आजकल कुछ खास उपलब्धि की किरण दिखाई नहीं दे रही है। उनके विचार में घराना रूपी परंपरा या गुरू-शिक्षण प्रणाली से ही हम श्रेष्ठ मंच-प्रदर्शक गायक उत्पन्न कर सकते हैं। उनके विचार में आवाज की प्रकृति के अनुसार ही यदि शिक्षार्थी को शिक्षा दी जाए तो ही किसी संभावना की उम्मीद नजर आती है। संगीत एक मौखिक विधा है, जिसका सफल प्रतिरूपण तब ही हो सकता है, जब कोई गुरू शिष्य को सीना-ब-सीना तालीम दे। पंडित अजय पोहनकर जी की गायकी की शिक्षा विधिवत किराना घराने से हुई है, तो भी उनकी गायकी में पटियाला घराने और उस्ताद आमिर खान साहब की गायकी के अंश दिखलाई देते हैं। आपके अनुसार संगीत कलाकारों एवं संगीत प्रेमियों को संकुचित दायरे से बाहर आना होगा और घराने की गायकी की परंपरा का निर्वाह करते हुए अन्य घरानों की गुणात्मक चीजें अपनानी होगीं। उनके विचार से गाना किसी की बपौती नहीं है। अगर कुछ अच्छी चीज़ सीखने और गाने को मिलती हैं तो अवश्य ही अपनानी चाहिएँ। पंडित पोहनकर जी स्वयं भी सदैव सीखने को तत्पर रहते हैं। जहां से भी उन्हें कुछ श्रेष्ठ सीखने को मिलता है, वह आज भी उसे अवश्य ही सीखते हैं। आप पंडित बिरजू महाराज की अद्भुत लयकारी क्षमता एवं चीज़ों को सुंदर एवं अनोखे ढंग से कहने के अंदाज से बहुत प्रभावित थे। आपके अनुसार पंडित बिरजू महाराज जी बनारस एवं लखनऊ अंग की ठुमरी का निर्वाह बहुत सुंदर तरीके से करते थे। पंडित बिरजू महाराज जी की यह अद्भुत क्षमता आपके लिए प्रेरणा स्रोत थी। पंडित अजय पोहनकर जी के अनुसार उन्हें संगीत के प्रत्येक सुर से आध्यात्मिक लगाव है और उन्हें संगीत की विविध विधाओं जैसे-ठुमरी, संकीर्तन, गज़ल आदि से समान रूप से प्रेम है।

सम्मान

सन् 2009 में पंडित अजय पोहनकर जी को भारत सरकार से सुरमणि अवार्ड, मध्यप्रदेश सरकार द्वारा तानसेन सम्मान, कर्नाटक सरकार से स्वर्ण परिक्रमा, संगीत प्रवीरम् पुणे, 2017 में 9वें गंगूबाई हंगल संगीत महोत्सव, हुबली में गंगूबाई हंगल अवार्ड तथा नारायण सम्मान से सम्मानित किया गया। सन् 2012 में आपको संगीत नाटक अकादमी द्वारा कलाकारों की श्रेणी में उच्चतम

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Refereed/Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 11, Issue 01, January-June 2024
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2024

सम्मान देकर सम्मानित किया गया। इण्डियन नैशनल अकैडमी फॉर म्यूजिक, डांस एंड ड्रामा द्वारा भी आपको सम्मानित किया गया।

पंडित अजय पोहनकर जी संगीत के ऐसे सच्चे साधक हैं जो आज भी सच्चे हृदय से संगीत-साधना में संलग्न हैं। आप रूढ़िवादी परम्पराओं से हटकर कला की साधना करने वाले कलाकार हैं। आप संगीत के क्षेत्र में नवाचार के पक्ष में हैं, परन्तु आप विभिन्न टी.वी. चैनलों से प्रसारित होने वाले रियल्टी-शो के प्रारूप से खिन्न हैं, जो कि कलाकार को कला की साधना से दूर भौतिकतावादी वस्तुओं की ओर उन्मुख करते हैं। आप भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा का निर्वाहण करते हुए, भारतीय संगीत में नवाचार, नवीन प्रयोग एवं नवरूप देने में सतत् प्रयासरत हैं। डागर बन्धु, कृष्णराव शंकर पण्डित, कुमार गन्धर्व, अब्दुल हलीम जाफर खाँ, अमजद अली खाँ, बुद्धादित्य मुखर्जी के साथ-साथ पं0 अजय पोहनकर जैसे महान् व्यक्तित्व मध्यप्रदेश की ही देन हैं, जिन्होंने अपनी कला के माध्यम से संगीत-जगत् को गौरवान्वित किया है।

संदर्भ

लक्ष्मी नारायण गर्ग: निबन्ध संगीत, लेख आचार्य बृहस्पति, ठुमरी में सनातन सांगीतिक तत्व, संगीत कार्यलय, हाथरस, उत्तर प्रदेश, मार्च 2003

अजय पोहनकर: कहन का अद्भुत अंदाज, छायानट, उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ, जनवरी-मार्च 2021

डॉ. सत्यवती शर्मा: ख्याल गायन शैली विकसित आयाम, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

पं. विश्वशंकर मिश्र: संगीत को नए कलेवर में ढालने की ज़रूरत है: अजय पोहनकर छायानट अंक-118 (अप्रैल-जून, 2007) उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ

संगीत नाटक, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली, 1992

At the centre: Fifteen Musicians of Madhya Pradesh by Mohan Nadkarni, Ustad Alauddin Khan Sangeet Akademy, Bhopal, 1982.